Jeevan hai anmol [Hindi]

Mahi Gupta

First year medical student, GMCH, Udaipur
Corresponding Author:
Mahi Gupta
Geetanjali Medical College & Hospital,
Geetanjali Medicity, Udaipur-313001, Rajasthan, India
Email: mahiguptarg at gmail dot com

Received: 31-MAR-2020 Accepted: 14-APR-2020 Published Online: 28-APR-2020

जीवन की हर राह सरल है,
गर मंसूबों का भाव 'अटल' है।

कहीं ऊँची,
कहीं है नीची;
यह उठती – गिरती,
जीवन की नित्य बदलती,
राह नवल है।

ओ! जनक – जननी की 'आँखों के काजल',
छट जाएँगे कष्टों के बादल।

रख हिम्मत,
अब चलदे हंसके।
तू क्यूँ है डरता?
देख तो आगे!
सब समतल है।
सोच मरण की क्षण – भंगुर है,
जीने की अगाध – ऊर्जा प्रबल है।
हार तो मन का झूठा छल है,
तुझमें हिम्मत का जज़्बात सबल है।

मन से हारे,
तभी हैं खोते;
तब ही लगता,
चहुं ओर जंगल है।
कर क्षण भर चिन्तन

Cite this article as: Gupta M. Jeevan hai anmol [Hindi]. RHiME. 2020;7:77-8.

हो जाएगा निर्मल,
नई राह मिलेगी,
सब होगा मंगल!

ज़रा जान तू खुद को!
तू कहाँ है दुर्बल?
ब्रह्माण्ड–सी शक्ति,
छुपी है तुझमें।
तुझ ही में अश्वों – सा बल है।

पर्वत शिखर – सा,
अडिग रख खुद को;
फिर जीवन का खेल सरल है।

निष्काम कर्म की भावना रख तू;
यही गीता का उपदेश सकल है।

जीवन की हर राह सरल है,
गर मंसूबों का भाव अटल है।

With gratitude: to my teachers - Dr Medha Mathur and Dr Anjana Verma - from Department of Community Medicine for being constant sources of inspiration.

Acknowledgment: This poem was recited by the poet at a competition held on 'World Mental health Day-2019' organised by the department of Community Medicine at Geetanjali Medical College & Hospital, Udaipur, Rajasthan, on 10th October 2019.